13 साधूपदेश

काका हाथरसी
(जन्म : 1906 ई., निधन : 1995 ई.)

'काका हाथरसी' हिन्दी के जानेमाने हास्य-व्यंग्यकार थे । आपने हिन्दी जगत में एक विशेष पहचान बनायी है । मूल नाम प्रभुलाल गर्ग था, पर हाथरस में एक नाट्यमंचन के दौरान आपने 'काका' की भूमिका निभायी थी तभी से आपने स्वयं अपना तखल्लुस काक हाथरसी रख लिया । हिन्दी के हास्य कवियों को मंच देने का श्रेय आपको जाता है । जहाँ कहीं भी हास्य कवि संमेलन आयोजित होते थे वहाँ काका की अनिवार्य अनुपस्थिति होती थी ।

हिन्दी की सुविख्यात पत्र-पत्रिकाएँ यथा 'धर्मयुग', 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'वीणा' आदि में आपकी रचनाएँ नियमित रूप से प्रकाशित होती रहती थीं । कुल मिलाकर आपके नाम 42 संकलन मिलते हैं । व्यंग्य-हास्य के क्षेत्र में आपके सुपुत्र निर्भय हाथरसी का नाम भी प्रसिद्ध है ।

1985 में आपको भारत सरकार द्वारा प्रतिष्ठित 'पद्मश्री' से सम्मानित दिया गया । हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा प्रति वर्ष काका हाथरसी पुरस्कार दिया जाता है ।

प्रस्तुत रचना में ढोंगी धूर्त बाबाओं की लीला का चित्रण किया गया है । 'साधूपदेश' शीर्षक से तो लगता है साधु अर्थात् सज्जन का उपदेश होगा पर कवि ने व्यंग्य शैली अपनाकर ऐसे साधु, ढोंगी बाबा आदि के प्रति अपना आक्रोश प्रकट किया है । पोथी पढ़ने और माला फेरने से कुछ नहीं होता । एक ओर हम 'रामनाम' जपते हैं । गोमुखी में हाथ डाल माला के दाने को फेरते हैं, तो दूसरी ओर मीठी छुरी भी चलाते है । ये तथाकथित साधु-बाबा न तो ज्यादा पढ़े लिखे होते हैं, न ज्ञानी इसलिए भक्तों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर न देने पड़ें इस हेतु 'मौनी बाबा' का स्वांग रचाये बैठे रहते हैं । वे मौन रहकर जीव-जगत और माया संबंधी असंगत बातें, मनगढ़ंत बातें किये जाते हैं ।

आइये प्रिय भक्तगण !
उपदेश कुछ सुन लीजिये
पढ़ चुके हैं बहुत पोथी
आज कुछ गुन लीजिये ।
हाथ में हो गोमुखी
माला सदा हिलती रहे
नम्र ऊपर से बनें
भीतर छुरी चलती रहे ।

नगर से बाहर बगीचे में
बना लें झोंपड़ी
दीप जैसी देह चमके
सीप जैसी खोपड़ी
तर्क करने के लिये
आ जाए कोई सामने
खुल न जाए पोल इस
भय से लगें मत काँपने ।
जीव क्या है ब्रह्म क्या ?

तू कौन है, मैं कौन हूँ ?
स्लेट पर लिख दो महोदय
आजकल मैं मौन हूँ,
धर्मसंकट शीघ्र ही
इस युक्ति से कट जाएँगे ।
सामने से तार्किक विद्वान
सब हट जाएँगे ।

किये जा निष्काम सेवा
सब फलेच्छा छोड़कर
याद फल की जब सताए,
खा पपीता तोड़कर
स्वर्ग का झगड़ा गया
भय भी नरक का छोड़ दे
पाप-घट भर जाए तो
काशी पहुँच कर फोड़ दे ।

शब्दार्थ

पोथी पुस्तक **गोमुखी** ऐसी थैली जिसमें माला रखकर नामस्मरण किया जाता है **तर्क** दलील, **पोल** रहस्य, दोष **धर्मसंकट** मुश्किल **निष्काम** निरपेक्ष बिना किसी कामना के, नि:स्वार्थ

मुहावरा

पोल खोलना रहस्य प्रगट करना, दोष बता देना

कहावत

मुख में राम बगल में छुरी कथनी और करनी में अंतर होना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) कवि भक्तगण को कौन-से गुण ग्रहण करने की बात करते हुए व्यंग्य करते हैं ?
(अ) पोथी पढ़कर ज्ञानी बनना (ब) हाथ में गोमुखी लेकर ईश्वर स्मरण करना
(क) मुख में राम बगल में छुरी चलाना (ड) उपदेश सुनना

(2) आजकल के साधु के सामने कोई तर्क करने आये तो वे क्या युक्ति करेंगे ?
(अ) अपने को ही ज्ञानि सिद्ध करेंगे (ब) डर के मारे वाद-विवाद ही नहीं करेंगे
(क) अपनी झोंपड़ी में प्रवेश ही नहीं करने देंगे (ड) अपनी पोल खुल न जाए इसके लिए मौन रहेंगे

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) दिखावा करते हुए साधु कैसा व्यवहार करता है ?
(2) साधु उपदेश देने के लिए झोंपड़ी कहाँ बनाते हैं ?
(3) दंभी साधुओं को किस बात का भय सताता है ?
(4) साधु मौन धारण क्यों करते है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) ढोंगी साधु भक्तजनों को क्या उपदेश देते हैं ?

(2) ढोंगी साधु मौनव्रत क्यों धारण करते है ?

(3) 'साधूपदेश' काव्य में काका हाथरसी ने किस पर व्यंग्य किया है ?

4. निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

पोल खोलना

5. निम्नलिखित शब्दों के विरोधी शब्द दीजिए :

प्रिय, नम्र, भीतर, भय, मौन

6. निम्नलिखित शब्दों के विशेषण बनाइए :

स्वर्ग, चमक, तर्क, धर्म, देह, नगर

7. निम्नलिखित शब्दों की भाववाचक संज्ञा बनाइए :

नम्र, काँपना, गुणी, भयभीत

8. निम्नलिखित शब्दों का कर्तृवाचक संज्ञा बनाइए :

उपदेश, धर्म, झगड़ा

योग्यता-विस्तार

- किसी पत्रिका में प्रकाशित हास्य और व्यंग्य की रचना को वर्ग में सुनाइए ।
- समाचारपत्रों के प्रकाशित ढोंगी साधुओं के समाचारों को काटकर संग्रह कीजिए और बुलेटिन बोर्ड पर प्रस्तुत कीजिए ।

शिक्षण-प्रवृत्ति

- ढोंगी साधुओं की करतूतों से बचने के लिए उपायों और सावधानियों की सूची तैयार कीजिए ।

●